R.N.I. UPBIL 04509/15/01/2015

ISSN 2454-5902

वर्ष 4 अंक 2 दिसम्बर 2018

Year 4 Vol. 2 December 2018

शोध सिन्धु

अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका

SHODH SINDHU

Half Yearly Research Journal

डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार सि
प्रधान सम्पादक

डॉ0 अनीता सिंह
सम्पादक

डॉ0 आनन्द कुमार दीक्षित
सह सम्पादक

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्न गुप्तं धनं।
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरुणां गुरुः।।
विद्या बन्धु जनो विदेशगमने विद्या परा देवता।
विद्या राजसु पूज्यते, नहि धनं विद्याविहीनः पशुः।।

-भर्तृहरि नीतिशतक श्लोक 17

शोध सिन्धु
वर्ष 4, अंक 2, दिसम्बर 2018

R.N.I. UPBIL 04509/15/01/2015
ISSN 2454-5902

अनुक्रमणिका

सम्पादक की कलम से ----

भारतीय साहित्य की परिकल्पना और अनुवाद 1

प्रोफेसर प्रदीप के. शर्मा, कुल सचिव, उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थान दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा मद्रास

भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों का आलोचनात्मक अध्ययन 4

डॉ. नागेश्वर यादव, विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग, होजाई कॉलेज, होजाई

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में मुक्त शिक्षा की प्रासंगिकता 8

आशाराम वर्मा, प्रवक्ता, परास्नातक शिक्षक शिक्षा संकाय, आदर्श कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जियापुर–बरूआ जलांकी, टाण्डा–अम्बेडकरनगर (उ0प्र0)

डॉ0 अनुभा शुक्ला, असिस्टेण्ट प्रो0, परास्नातक शिक्षक शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह पी0जी0 कालेज सिंगरामऊ, जौनपुर (उ0प्र0)

डॉ0 मनीराम वर्मा के लोकनाट्यों की प्रमुख प्रवृत्तियाँ 10

रामजीत, शोध छात्र हिन्दी, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ0प्र0)

नारी विमर्श और समाज का बदलता स्वरूप 14

विभा वर्मा, शोधार्थी, शांति निकेतन विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल

महिला सशक्तिकरण 17

रूपा कुमारी, कनिष्ठ अनुवादक, कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा

मीडिया की भाषा! 19

डॉ. पी. एस. विजय राघवन, सम्पादक प्रभारी, राजस्थान पत्रिका चेन्नई संस्करण

भीष्म साहनी के उपन्यास साहित्य में नारी शिक्षण का चित्रण 21

डॉ. अरूणा, आचार्य, हिन्दी विभाग, एल.वि.डि. महाविद्यालय, रायचूरू–584103.

प्राचीन काल के हस्त शिल्प एवं हस्त शिल्पी 23

श्रीमती अम्बुज गौतम, प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ0प्र0)

महराजगंज जनपद में जनसंख्या का स्वरूप 29

शिवेन्द्र सिंह, शोध छात्र, भूगोल विभाग, दीनदयाल उपाध्याय, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0)

प्रो0 यशपाल समिति (1992–93) : परिचय एवं प्रासंगिकता 32

डॉ0 भुवाली सिंह, एसो0 प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग, उदित नारायण पी.जी. कालेज, पड़रौना, कुशीनगर (उ.प्र.)

प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य–संतुष्टि पर विद्यालयी वातावरण तथा समायोजन के प्रभाव का अध्ययन 37

सुरेन्द्र कुमार वर्मा, शोधार्थी–शिक्षा संकाय, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

R.N.I. UPBIL 04509/15/01/2015
ISSN 2454-5902

भीष्म साहनी के उपन्यास साहित्य में नारी शिक्षण का चित्रण

डॉ. अरूणा*

भीष्म साहनी ने अपने उपन्यास 'मैयादास की माडी' में नारी–शिक्षा विषयक मूल्य बोध की अभिव्यक्ति की है। वानप्रस्थी की बेटी सुमित्रा का पति केवल इसलिए मर जाता है क्योंकि उसके बीमार होने की सूचना जिन पत्रों के माध्यम से दी जाती है, सुमित्रा अशिक्षित होने के कारण उन पत्रों को पढ़ ही नहीं पाती। वह समझती है कि पत्र उसके पिताजी के लिए आया है। एक के बाद एक तीन पत्रे आते है और बाद में वानप्रस्थी जी ही उन पत्रों को पढ़ते है। वे शीघ्र ही दामाद को देखने वजीराबाद जाते है, परंतु दामाद की मृत्यु हो जाती है और उनकी बेटी सुमित्रा विधवा हो जाती है। ससुराल में उसे कोई संभालने वाला नहीं होता। उसका यौवन घुलने लगता है। वह रोग से पीड़ित होकर बार–बार कहती है ''मैने भी दो अक्षर पढ़ लिए होते तो क्या मालूम वह बच ही जाते।''

सुमित्रा जब मरणासन्न होती है तो वानप्रस्थी मन ही मन प्रतिज्ञा करते है कि वह लडकियों के लिए पाठशाला खोलेंगे। ''जो काम करने लगा हूँ उससे मेरी बेटी तो नही पढ़ पाएगी, पर किसी की बेटी तो पढ़ेगी, किसी लडकी की तो भलाई होगी मेरी मेहनत तो किसी के काम आएगी।'' स्पष्ट है कि सुमित्रा अपनी अशिक्षा के कारण पति को खो देती है। पति के मृत्यु से बेहाल होती एक दिन वह अपना दम तोड़ देती है।

वही उपन्यास की दूसरी नारी चरित्र रूक्मणी जो पाठशाला में पढ़ने की लिए नाम लिखवाती है। कल्ले के भाई मंझले को रूक्मणी का बाहर निकलना और पाठशाला में पढ़ना अच्छा नहीं लगता। बालमकुंद तो कंकड फेंक कर मारता है, तथा कस्बे के अन्य लोग व्यंग्यात्मक प्रहार भी करते है। मंझला विरोध करते हुए कहता है, ''बाप दादा के नाम पर हम कालिख नहीं पोतने देंगे। कोई घर के बाहर कदम रखकर तो देंखे। मैं बोटी–बोटी काट डालूँगा। मैं टांगे चीरकर रख दूँगा।''

पूरे घरवाले रूक्मणी के पढ़ने का विरोध करते है। अपने ही लोग इसे खानदान की बेइज्जती मानते है। ''कल्ले ओ कल्ले'' कानो में तेल डालकर सो रहा है? मगर तेरी घरवाली ने घर के बाहर कदम रखा तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा। मंझले का मित्र बालमुकुंद नशे में लड़खडाती आवाज में कहता है, अपने घर की औरतों को हम बेपर्दा नहीं होने देंगे। हमारी भाभी हरजाई नही है।'' सांमतीय समाज व्यवस्था में पुरूष सत्तात्मक समाज नारी शिक्षा का विरोध करता है।

भागसूध्दी यह उपन्यास की ऐसी नारी पात्र है, जो विधवा नारी है, जिसे न अंग्रेजी शासन से डर है न माडी वालों से भय और कस्बे के किसी व्यक्ति से डर है। वह निर्भीक, निडर, सत्यभाषी, कटुभाषी सभी कुछ है। वह वानप्रस्थी शिक्षक की पाठशाला में रूक्णमी के शिक्षा अर्जित करने का समर्थन करती है और मँझले को कठोर शब्दों में फटकारती है, ''नाले चोरे ते नाले चतरा। वाह जी वाह! कैसा वक्त आया है। वे घनश्याम! तू सीधा क्यों नहीं कहता कि तू सारी माडी हड़पना चाहता है। इन्हे घर से निकालना चाहता है। इस वक्त तु कुछ भी कर सकता है पर यह नाटक क्यों खेल रहा है?''

उम्र की ढ़लान पर खडी भागसुध्दी पढ़ने के लिए लालति रूक्मणी का समर्थन करती है। उसे कदम–कदम पर सहायता करती है। रूक्मणी वानप्रस्थीजी के संरक्षण में प्राइमरी स्कूल तक शिक्षा अर्जित करती है और उन्हीं के प्रयासों से कस्बे की पाठशाल में प्रधानाध्यापिका बन जाती है। वह पढ़ लिखकर प्रधानाचार्य के पद तक पहुँचकर आत्म निर्भर बनती है। जीवन में जब वह सफलता प्राप्त कर सुख प्राप्ति की आशा में अग्रसर होती है तो अमरनाथ यात्रा में पहाड़ से फिसलकर मृत्यु को गले लगाती है।

उपन्यास में नारी शिक्षा के महत्व को स्पष्ट किया गया है।जिसमें सुमित्रा, रूक्मणी और विधवा भागसूध्दी सह तीनों नारियाँ अशिक्षा की वजह से विभिन्न दुघर्टना का सामाना करती है। लेखक ने नारी जीवन की करूण जिजीविशा को प्रस्तुत किया है, साथ ही युग की विभिन्न रीति रस्मो के ऐसे घिनौने चित्र खींचे है, जो अत्यंत हृदयविदारक सिद्ध होते है।

उपन्यास में विधवा की स्थिति करूणा जनक बताई गई है। पति की मृत्यु का कारण उसे ही माना जाता है। उस समय के समाज में जब स्त्री विधवा होती है तब उसके साथ कितना क्रूर व्यवहार किया जाता था। ससुराल की औरतें भागसुध्दी के बाल नोचते गाती थी, ''हाय मंगली, खा गयी मंगला। हाय–हाय मंगली।'' अधेड उम्र की स्त्रियाँ घेरा बनाकर छतियाँ पीट रही थी। बाहर से बिरादरी की कोई भी स्त्री आता तो छाती पीटते–पीटते आती और वैण करती। स्पष्ट है कि अशिक्षा के कारण सामंती समाज में नारी पर ही नारी अन्याय एवं

*आचार्य, हिन्दी विभाग, एल.वि.डि. महाविद्यालय, रायचूरू – 584103.

अत्याचार करती है। विधवा नारी का जो समाज में दोय्यम स्थान है, वह उस युग में भी प्रचलित था, जो आज के आधुनिक जीवन में भी प्रचलित है। भीष्मजी यह स्पष्ट करना चाहते है कि पुरूष प्रधान समाज चाहे प्राचीन, मध्य या आधुनिक युग में हो, नारी केवल अत्याचार तथा भोग और इस्तेमाल की वस्तु बनी रही है।

अंततः उपन्यास एक माडी अथवा कस्बे की कहानी होकर भी बहते काल–प्रवाह और बदलते परिवेश की दृष्टि से एक समूचे युग को समेटे हुए है। बीते युग के कथा सूत्रों को समेटे हुए युग–युग की सामाजिक समस्याओं का साक्षात्कार कराता है। मानवीय संवेदना और मानवीय मूल्य किसी खास कालखण्ड में बद्ध नहीं होते, बल्कि प्रत्येक युग के आदर्श होते है। प्रत्येक युग को अधोगामी प्रवृत्तियों से बचाने के लिए आवश्यक होते है। 'मैयादास की माडी' यह उपन्यास एक सामाजिक जीवन का दस्तावेज ही नहीं है, यह नाटकीय उतार–चढ़ावों के साथ अनेक चरित्रों के घात–प्रतिघात की मानवीय कथा भी है।

संदर्भ :

1. मेरे साक्षात्कर – भीष्म साहनी – पृ : 78
2. मैयादास की माडी – भीष्म साहनी – पृ : 18
3. मैयादास की माडी – भीष्म साहनी – पृ : 20
4. मैयादास की माडी – भीष्म साहनी – पृ : 21.22
5. मैयादास की माडी – भीष्म साहनी – पृ : 27
6. मैयादास की माडी – भीष्म साहनी – पृ : 53